माता–पिता, गुरू, प्रभु, चरणों में ....

(तर्ज – देख तेरे संसार की हालत ...)

माता–पिता, गुरू, प्रभु, चरणों में दंडवत बारम्बार
हम पर किया बड़ा उपकार ।। टेर।।

माता ने जो कष्ट उठाया, वो ऋण कभी न जाय चुकाया ।
अंगुली पकड़ कर चलना सिखाया, ममता की दी शीतल छाया ।
माता की गोदी में पलकर, हम कहलाते होशियार ।। हम पर...

पिता ने हमें सुयोग्य बनाया, कमा–कमा के धन जुटाया।
पढ़ा–लिखा विद्वान् बनाया, जीवन–पथ पर चलना सिखाया ।
जोड़–जोड़ कर अपनी संपत्ति का बना दिया हकदार ।।हम पर...

सत्य–मार्ग गुरू ने दर्शाया, अंधकार सब दूर हटाया ।
हृदय में भक्ति दीप जलाकर, हरिदर्शन का मार्ग बताया ।
बिन स्वारथ ही कृपा करे वे, कितने हैं उदार ।। हम पर...

प्रभु–कृपा से नर–तन पाया, संत–मिलन का साज सजाया ।
बल, अरू बुद्धि, विद्या देकर, सब जीवों में श्रेष्ठ बनाया ।
जो भी उनके चरणों में आवे, कर देते उद्धार ।। हम पर...

साधु भूखा भाव का, धन का भूखा नाहिं।
धन का भूखा जो फिरै, सो तो साधु नाहिं।।